1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को

बसन्त पंचमी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 43, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 जनवरी, 2020 से रविवार 2 फरवरी, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती

196 वें

जन्मोत्सव

पर

फाल्गुन कृष्ण 10 (दयानन्द दशमी) 2076 विक्रमी तद्नुसार मंगलवार 18 फरवरी, 2020

यज्ञ-प्रवचन, भजन संध्या एवं भव्य जन्मदिवस समारोह

बुधवार 12 फरवरी, 2020 **आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी** नई दिल्ली-110018	मंगलवार 18 फरवरी, 2020 **आर्यसमाज आदर्श नगर** दिल्ली-110033	मंगलवार 18 फरवरी, 2020 **आर्यसमाज अमर कालोनी** नई दिल्ली-110024	मंगलवार 18 फरवरी, 2020 **महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र** गाजीपुर, दिल्ली (निकट आनन्द विहार बस अड्डा)

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनकर संगठन शक्ति का परिचय दें। कार्यक्रम के समय एवं स्थान की जानकारी अगले अंक में।

196वां महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव उत्साह के साथ मनाएं आर्यसमाज व आर्य संस्थाएं

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि देव दयानंद सरस्वती का जन्मदिवस मानव मात्र के लिए कल्याणकारी प्रेरणाओं का महोत्सव है। ऋषि-मुनियों की भूमि भारत में महर्षि देव दयानंद का स्थान हिमालय के समान ऊंचा और विशाल है। 196 वर्ष पूर्व 12 फरवरी 1824 को गुजरात प्रांत के टंकारा में जन्में ऋषि देव दयानंद संपूर्ण भारत और विश्व के लिए पूजनीय और अनुकरणीय हैं। यूं तो सभी लोग अपने स्वजनों का जन्मदिन अपने घर, परिवार और रिश्ते-नातों के बीच मनाते हैं। इससे आगे अगर कोई थोड़ा सा ज्यादा लोकप्रिय हो तो क्षेत्र, नगर, प्रांत और राष्ट्रीय स्तर पर जन्मदिन मनाया जाता है। लेकिन जिन्होंने सोता देश जगाया, वेदों का पाठ पढ़ाया, सत्य का मार्ग दिखाया, नारी उद्धार कराया, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों से समाज को बचाया, स्वयं का स्वयं से परिचय करवाया, मानव जीवन का लक्ष्य और उददेश्य बताया, ढोंग, पाखंड़ से पीड़ित मानव मात्र को सच्चिदानंद स्वरूप परमात्मा की सच्ची उपासना का सुपथ दिखाया, ऐसे ऋषिवर देव दयानंद जो संपूर्ण विश्व में एक महान समाज सुधारक के रूप में विख्यात हैं, उनका जन्मदिन समस्त आर्यजनों, आर्य परिवारों, आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा अन्य अनेक आर्य संस्थाओं, प्रतिष्ठानों की संपूर्ण उपयोगिताओं और उपलब्धियों का सबसे बड़ा महोत्सव है। इससे आगे यह पूरे भारत देश और विश्व के लिए हर्षोत्सव है।

बंधुओ, हर वर्ष की तरह इस वर्ष महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव दयानंद दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) 18 फरवरी 2020 मंगलवार को सुनिश्चित है। अत: आईए हम सब आर्यजन अपने परिवारों में, आर्य समाजों में, आर्य शिक्षण संस्थाओं में एवं अन्य सभी आर्य संस्थाओं तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों में संपूर्ण धरा पर प्रेमसुधा बरसाने वाले ऋषिवर देव दयानंद जी का जन्मदिन पूरे उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियों के साथ मनाएं। इस दिन भारत सरकार की ओर से ऐच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी सुनिश्चित है। लेकिन हम सब आर्यो के लिए यह अवकाश का दिन नहीं है बल्कि हम

- शेष पृष्ठ 6 पर

71वें गणतंत्र दिवस पर सामूहिक आर्य पारिवारिक भ्रमण एवं मिलन समारोह सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सामूहिक आर्य पारिवारिक भ्रमण एवं मिलन समारोह का आयोजन 26 जनवरी 2020 को किया गया। इस अवसर पर दिल्ली की आर्य समाजों से अधिकारी, कार्यकर्त्ता, सदस्य सभी आर्य नर-नारी बेगानी फार्म्स, द्वारका लिंक रोड़, समालखा दिल्ली में पहुंचे। इस पारिवारिक आयोजन में सभी आर्यजन परिवार सहित आए थे। देश के 71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सहित गणमान्य महानुभावों द्वारा सर्वप्रथम ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना मंत्रों का पाठ किया गया। राष्ट्रगान गाया गया और तिरंगा झंडा शान से लहराया गया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने राष्ट्रभक्ति का संदेश देते हुए आर्य समाज के महापुरुषों को स्मरण किया तथा देश पर बलिदान होने वाले अमर शहीदों से राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा प्राप्त करने का संदेश दिया। कुमारी अराधना शर्मा ने वंदेमातरम गीत पूरे शास्त्रीय संगीत के साथ गाया। जिससे पूरे वातावरण में राष्ट्रभक्ति का भाव पैदा हो गया। इसके बाद वैदिक

- शेष पृष्ठ 6 पर

वेद-स्वाध्याय

उचित काल की महती महिमा

काले तपः काले ज्येष्ठ काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः।। -अथर्व. 19/53/ 8
ऋषिः- **भृगुः** ।। देवता-**कालः**।। छन्दः-**अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **काले** = काल में, उचित काल में **तपः** = तप, **काले** = काल में **ज्येष्ठम्** = ज्येष्ठत्व और **काले** = काल मे ही **ब्रह्म** = ज्ञान **समाहितम्** = रखा हुआ है। **ह** = निश्चय से **कालः** = काल **सर्वस्य** = सबका **ईश्वरः** = ईश्वर है **यः** = जोकि **प्रजापतेः** = सब प्रजा के उत्पादक हिरण्यगर्भ का भी **पिता** = उत्पादक **आसीत्** = होता है।

विनय - प्रत्येक वस्तु अपने काल में ही होती है। जिस कार्य का, जिस बात का उचित काल नहीं आया है उसके लिए यत्न करना, उसकी आशा करना निरर्थक होता है, मूर्खतापूर्ण होता है, अतः हमें अपना प्रत्येक कार्य उचित काल में ही करना चाहिए। हमें तप करना हो, ज्येष्ठत्व पाना हो या ज्ञान प्राप्त करना हो, चाहे कुछ करना हो, यह सब हमें कालानुसार ही करना चाहिए। देखो, परमेश्वर भी अपना सब-कुछ नियत काल में करते हैं। वे समयपालन में भी परम हैं, परिपूर्ण हैं। वे इस जगत् की उत्पत्ति के लिए अपना ज्ञानमय तप बिलकुल नियत काल में करते हैं, ज्येष्ठ हिरण्यगर्भ को नियत काल पर प्रादुर्भूत करते हैं और ब्रह्म (वेद) का प्रकाश भी सदा नियत काल आने पर करते हैं। कालरूप में ही ये भगवान् प्रजापति के भी पिता हैं। यह सब संसार बेशक सूर्य प्रजापति या हिरण्यगर्भ-प्रजापति से उत्पन्न हुआ है, किन्तु वे प्रजापति भी तो काल आने पर ही उत्पन्न हो सकते हैं, अतः उनके भी जनक ये काल परमेश्वर हैं और केवल सृष्टि की यह उत्पत्ति ही नहीं, किन्तु सृष्टि का प्रतिक्षण संचालन भी काल द्वारा ही हो रहा है। इस संसार का एक तिनका भी बिना काल आये नहीं हिल सकता। सचमुच काल ही सबका ईश्वर है। भूत का, भवत् का, भविष्यत् का सब ब्रह्माण्ड, इस ब्रह्माण्ड की सब अनगिनत वस्तुएँ, काल में ही यथास्थान रखी हुई हैं। काल का अतिक्रमण कोई नहीं कर सकता, अतः आओ, हम भी उस कालदेव की उपासना करें, हम देखें कि आज से उनके प्रतिकूल हमारा कभी कोई आचरण न होने पाये और हमारा एक-एक कर्म, एक-एक चेष्टा उस कालदेव की अनुमति पाकर ही हुआ करे।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

अतिवादिता से बचकर रहना हितकर

मोबाइल फोन तोड़ रहा है - रिश्तों की कमर

.....विवाह जैसा पवित्र रिश्ता एक फ्रेम में तो फिट आ रहा है लेकिन एक भावनाओं में नहीं। मोबाइल ने इंसानी रिश्तों में इतनी दूरियां पैदा कर दी हैं। लोग साथ में रहते हुए भी आज कल साथ में नहीं रहते हैं जिसे देखो वो अपने फोन में खोया नजर आता है। वह यह भूल जाता है कि फोन में खोने के चक्कर में वह अपनी जिन्दगी की किन-किन खुशियों को खोता जा रहा है। डिजिटल होती दुनिया ने आपसी प्यार को भी धुंए की तरह हवा में उड़ा दिया है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी, हमसफर साथ हैं, सफर कहीं और है। अगर लोग इसी तरह मोबाईल की दुनिया में व्यस्त रहे तो रिश्ते तो दूर बात दुनिया में एक दिन जरा से लगाव के लिए भी हाथ फैलाने पड़ेंगे। जो घर खुशियों से महकते थे उनमें सन्नाटे पसरे नजर आयेंगे। ...

समय के साथ कदम मिलाकर करना कोई गलत बात नहीं है. लेकिन किसी चीज का इतना भी आदी नहीं होना चाहिए कि बाकी चीजों का अंत ही कर डालें। पिछले दिनों मोबाइल फोन के झगड़े के कारण तीन माह से एक दूसरे से अलग रह रहे पति-पत्नी अब फिर एक साथ रहेंगे, लेकिन इस शर्त के साथ कि पति पत्नी अपना-अपना मोबाइल फोन हमेशा अलग अलग रखेंगे। ऐसे न जाने कितने मामले हर रोज नारी उत्थान केन्द्रों पर पहुँच रहे है। कांउसिलिंग के लिए जो मामले आते हैं उनमें से 70 से 80 फीसदी मामले ऐसे होते हैं जिनमें पति-पत्नी के बीच हुए विवाद का मुख्य कारण मोबाइल फोन बना। मोबाइल को लेकर कभी पत्नी पति पर शक करती है तो कभी पति पत्नी पर। इसी शक की वजह से बात-बात पर विवाद होता है और मामला तलाक होने तक पहुंच जाता है।

मोबाइल फोन ने भले ही दूरियों को खत्म किया हो लेकिन इसमें कोई दोराय नहीं है कि यही अब वैवाहिक संबंधों को भी बिगाड़ने में अहम भूमिका निभा रहा है। यह तथ्य न मेरे हैं न आपके, बल्कि महिला आयोग और महिला पुलिस थाने में आ रही शिकायतों के आधार पर साबित हो रहा है। आप जाइये महिला थानों में कुछ देर बैठिये और नजारा देखिये किस तरह मोबाइल के कारण रिश्ते टूट रहे हैं। विवाहित लड़कियां अपने ससुराल वालों पर आरोप लगाती हुई नजर आती मिलेंगी कि मेरी सास को मेरे फोन से एतराज है और ससुराल पक्ष यह कहता मिलेगा कि सारा दिन फोन पर लगी रहती है। पता नहीं कहाँ-कहाँ बात करती है यानि ससुराल पक्ष बहू द्वारा मोबाइल फोन पर अपने मायके में लगातार बात करना पसंद नहीं करता है। वहीं लड़की पक्ष का तर्क होता है कि उनकी बेटी पर कई तरह की बंदिशें लगाई गई हैं।

अभी तक जिस भारतीय समाज में विवाह को सात जन्मों का बंधन कहा जाता रहा है। अब वह सात साल भी चल जाये तो गनीमत समझो क्योंकि शादी के 6 महीने भी रिश्ता मुश्किल से टिक रहा है। जहाँ अभी तक घर टूटने की वजह पति पत्नी में विचार न मिलना, दहेज और घरेलू हिंसा जैसी शिकायत आती थीं, लेकिन अब हर जगह मोबाइल फोन पर ज्यादा बात करने जैसी शिकायत दर्ज हो रही हैं और रिश्तों में अलगाव की नौबत आ जाती है। मोबाइल के कारण विवाद का एक मामला पिछले दिनों नारी उत्थान केंद्र ने निपटाया था। पति का आरोप था कि उसकी पत्नी मायके वालों से लंबी-लंबी बातें करती है। फोन के कारण विवाद बढ़ने पर पत्नी ने मायके वालों को बुलाकर पति को ही पिटवा दिया। इससे खफा पति ने पत्नी को मायके में छोड़ दिया। पत्नी ने जब पुलिस से इसकी शिकायत की तो मामला नारी उत्थान केंद्र पहुंचा। जहां दोनों के बीच इस शर्त पर समझौता हुआ कि पत्नी मायके वालों से मोबाइल पर जरूरी होने पर ही बात किया करेगी।

केवल मायका और ससुराल ही नहीं बड़ी संख्या में ऐसे मामले भी आ रहे हैं जिनमें पति पत्नी एक दूसरे पर विक्वासघात के आरोप लगाते मिलते हैं तो कई जगह रिश्ते ही नहीं बल्कि इन्सान भी दम तोड़ रहे हैं। पिछले वर्ष अप्रैल में बिलासपुर में एक पति अपनी पत्नी का मोबाइल पर किसी अन्य युवक से बात करना बर्दाश्त नहीं कर पाया और तीन साल की बेटी के सामने ही सिलबट्टे से पत्नी पर हमला कर दिया, इससे महिला की मौके पर ही मौत हो गई थी।

हत्या और तलाक के मामले इसलिए तेजी से बढ़े हैं, क्यों कि नई जनरेशन में एक दूसरे पर विश्वास ही नहीं रह गया। एक तो आज के कामकाजी जीवन में आफिस से लेकर बाहर तक लड़के और लड़कियां दोनों ही एक स्पेस और नये साथी को प्राथमिकता देने लगे है। लिहाजा दोनों ही एक दूसरे के प्रति एक अविश्वास से भरे होते हैं। दूसरा सबसे बड़ी बात है कि एक समय पत्नियाँ चूंकि आर्थिक तौर पर पति पर निर्भर होती थी, जिससे सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा की वजह से तलाक के बारे में सोच भी नहीं सकती थी, लेकिन आज लड़कियां पढ़ीं लिखी तो हैं ही, साथ ही वे आर्थिक तौर पर भी निर्भर हैं इसलिए इस रिश्ते में एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना कम हो रही है। बाकी रही सही कमी सोशल मीडिया पर बन रहे रिश्ते पूरी कर देते है। नये साथी की तलाश पढ़े-लिखे वर्ग में तेजी से उभरकर सामने आई है जहाँ पुराने के साथ जरा सी अनबन हुई कि फट से नये को मैसेज टाइप हो जाता है कि हम इस रिश्ते मुक्ति चाहते है। यानि अब शिकायतों की बाढ़ ये है कि बीवी घर पर ध्यान न देकर पूरे समय फोन पर व्यस्त होती है या फिर यह कि उनका पति किसी दूसरी लड़की से बात करता है।

इसके अलावा कई मामलों में यह सुनने को आया कि शादी से पहले ही यहाँ तक बात साफ हो जाती है कि पति-पत्नी अपने मोबाइल में स्टोर सोशल मीडिया एप्प्स फेसबुक आदि के पासवर्ड साझा करेंगे। मतलब विश्वास और भावना का एक रिश्ता आज अविश्वास में डुबकी लगा रहा है। विवाह जैसा पवित्र रिश्ता एक फ्रेम में तो फिट आ रहा है लेकिन एक भावनाओं में नहीं। मोबाइल ने इंसानी रिश्तों में इतनी दूरियां पैदा कर दी हैं। लोग साथ में रहते हुए भी आज कल साथ में नहीं रहते हैं जिसे देखो वो अपने फोन में खोया नजर आता है। वह यह भूल जाता है कि फोन में खोने के चक्कर में वह अपनी जिन्दगी की किन-किन खुशियों को खोता जा रहा है। डिजिटल होती दुनिया ने आपसी प्यार को भी धुंए की तरह हवा में उड़ा दिया है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी, हमसफर साथ हैं, सफर कहीं और है। अगर लोग इसी तरह मोबाईल की दुनिया में व्यस्त रहे तो रिश्ते तो दूर बात दुनिया में एक दिन जरा से लगाव के लिए भी हाथ फैलाने पड़ेंगे। जो घर खुशियों से महकते थे उनमें सन्नाटे पसरे नजर आयेंगे।

- ***सम्पादक***

पेरियार की घातक सोच की पड़ताल

पेरियार सिफ सनातन संस्कृति का विरोधी था?

राजनीति में धर्म का तड़का हो या फिर देवी-देवताओं का अपमान। देश की सियासत में ये नया बिलकुल नहीं है. उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक समय समय पर कई लोग आये एक विशेष तबके को खुश करने के लिए, हिन्दुओं के आराध्य देवी-देवताओं का अपमान कर अपनी राजनीति के फर्श को खूब चमकाने की कोशिश की। अभिनेता से नेता बने रजनीकांत ने दक्षिण भारत में बौद्धिक आतंकवाद के जन्मदाता पेरियार पर हमला करते हुए कहा कि पेरियार ने 1971 में सलेम में आयोजित एक रैली में भगवान राम और सीता की वस्त्रहीन तस्वीरों का इस्तेमाल किया था। पेरियार हिंदू देवताओं के कट्टर आलोचक थे। लेकिन उस समय किसी ने पेरियार की आलोचना नहीं की जबकि पेरियार ने उन मूर्तियों को चप्पल की माला भी पहनाई थी।

जब पेरियार ने यह सब किया तो उस समय देश में एक भी एफआईआर या कोई तहरीर पेरियार के खिलाफ नहीं लिखी गयी। जबकि आज इस मामले से पर्दा उठाने वाले रजनीकांत पर तमिलनाडु की मुख्य विपक्षी पार्टी डीएमके ने आईपीसी की धारा 153 के तहत मामला दर्ज कराया है। हालाँकि रजनीकांत ने माफी मांगने से इंकार कर दिया है और इस मामले में सबसे बड़ी बात यह रही कि कभी रजनीकांत के आलोचक रहे सुब्रह्मण्यम स्वामी रजनीकांत के साथ आकर खड़े हो गए हैं।

अगर वामपंथियों की लीला देखें तो ये लोग किस तरह पेरियार जैसे सनकी, बौद्धिक रूप से समाप्त व्यक्ति को नायक बना देते हैं, बल्कि महानायक बना देते हैं। मार्कसवादी वामपंथी कलमकार ऐसे लोगों का नामकारण कुछ यूँ करते हैं कि इन्हें दलित, चिन्तक दलित विचारक,

.....पेरियार ने कहा था कि रामायण और भागवत गीता दोनों जातिवाद को बढ़ावा देती हैं, जबकि यह सच नहीं है क्योंकि, रामायण में राम एक औरत सबरी के साथ बैठकर बेर खाकर उसे सम्मान देते हैं और गीता में वर्णव्यस्था की सही सोच दर्शाई गयी है जिसमें साफ लिखा है कि इंसान का वर्ण उसकी काबिलियत से तय होगा। इसी से इनकी सोच समझी जा सकती है कि वैदिक धर्म और संस्कृति की समझ इन लोगों की न्यून थी। इसी कारण इन लोगों ने अपने जैसे लोग पकड़े और विरोध को अपनी आजीविका बना डाला। कुरीतियों का विरोध करो धर्म का विरोध गलत है और देश में फैली हुई बुराई का विरोध करो देश का विरोध गलत है।.....

नारीवादी तथा सामाजिक कार्यकर्ता लिखा जाने लगता है। जबकि पेरियार ने जिस जस्टिस पार्टी का गठन किया था उसका मूल सिद्धांत स्वाभिमानी हिन्दुत्व समाज का विरोध था। जबकि यह सबसे बड़ी साम्प्रदायिकता थी।

जो पेरियार आज टुकड़े-टुकड़े गैंग का कुल देवता क्यों बना हुआ है क्योंकि कभी यह भी इस भारत के टुकड़े टुकड़े करना चाहता था और एक द्रविड़स्तान बनाना चाहता था। अगर पेरियार का किस्सा पूरा समझे तो कुछ यूँ है कि इरोड वेंकट नायकर रामासामी जिसे लोग पेरियार के नाम से जानते हैं, कभी यह महात्मा गांधी के शिष्य रहे थे। शायद यहीं से इन्होंने हिन्दुत्व का विरोध सीखा हो? बताया जाता है एक बार जब ये जवान थे काशी विश्वनाथ के मंदिर में उन्हें प्रसाद देने से मना कर दिया तो सिर्फ इस कारण यह हिन्दू धर्म से नफरत करने लगे थे। समझिये सिर्फ इतनी सी बात पर नफरत!

अगर किसी परिवार में एक आदमी गलत है क्या इस कारण पूरे परिवार से नफरत करेंगे या उसे सुधारने की दिशा में काम करेंगे? वैदिक संस्कृति असंख्य वर्षों पुरानी है। समय के साथ कुरुतियाँ आना स्वभाविक हैं, जब मूर्ति पूजा को स्वामी दयानन्द ने देखा तो उन्होंने अपने धर्म से, अपने लोगों से नफरत नहीं की बल्कि एक जागरूक आन्दोलन चलाया। लोगों को सही राह पर लाये, अपनी असली संस्कृति का बोध कराया। क्योंकि स्वामी जी जानते थे कि अंधविश्वास हो या जाति-प्रथा या छुआछूत इनके खिलाफ लड़ाई जरुरी है लेकिन वह काम ईश्वर और धर्म में विश्वास रखकर भी हो सकता है। दूसरी मिसाल के तौर पर डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि भारत में धर्म ही उसकी आत्मा है और सारे सामाजिक सुधार धर्म की सहायता से ही होंगे। लेकिन इसके उलट पेरियार और उनके चेले पहले धर्म को समाप्त करना चाहते हैं वे भी सिर्फ हिन्दू धर्म को, इस्लाम और ईसाई मत का कोई विरोध नहीं। जबकि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कन्या शिक्षा से लेकर छुआछूत व दलितोंद्धार किया लेकिन अपने धर्म का विरोध नहीं किया।

पेरियार ने नारा दिया कि सांप और ब्राह्मण जहाँ दिखे पहले ब्राह्मण को मारो। लेकिन इसके बाद पेरियार और उनके भक्तों के लिए रावण देवता बन जाता है और श्री राम जी अपमान के पात्र। एक समय खुद पेरियार और उनके समर्थक रामायण को झूठ और ब्राह्मणों की कल्पना बताते थे लेकिन फिर कहते थे कि रावण एक द्रविड़ राजा था वह शूद्र था और हत्या राम द्वारा उसकी कर दी गयी। सन 1974 को पेरियार की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी मनाम्मई ने राम लीला के विरोध में रावण लीला का ढोंग किया और बाद में राम लक्षमण और सीता की मूर्तियां जलाई और कहा द्रविड़ियन राजाओं की आर्यन राजाओं द्वारा हत्या का हम विरोध करते हैं। जबकि मनाम्मई के बारे में कहा जाता है कि पेरियार द्वारा गोद ली गयी बेटी पर बाद में इसीसे शादी रचा ली।

असल में पेरियार, वामपंथी, वामन मेशाम की बामसेफ समेत आज ये कई गिरोह इस हिन्दुस्तान में ऐसे पैदा हो गये जिन्होंने अपनी सोचने की क्षमता इतनी खो दी कि अब इनके लिए किराये के लोग सोच रहे हैं कि ये लोग क्या बोलें। एक दिन कहते हैं धर्म अफीम है अगले दिन कहते हैं दलितों तुम बौद्ध धर्म अपना लो। इनके बयान सुनकर लगता है जैसे यह लोग खुद गांजे का सेवन करते हों। इनके चेलों की करामात देखिये एक ओर ये लोग कहते हैं की बाबा साहब आंबेडकर और पेरियार बहुत अच्छे मित्र थे। दोनों का लक्ष्य एक था। लेकिन जहाँ आंबेडकर जी ने संविधान बनाकर इस देश को दिया। दूसरी ओर पेरियार और उनके चेलों ने 1957 में संविधान की प्रतियां यह कहते हुए जलाई थी कि यह आज भी जातिवाद को जिंदा रखे हुए हैं। हालांकि यही संविधान सबको समान अधिकार देता है। इसी संविधान के तहत दलितों को आरक्षण भी मिला और मताधिकार भी जिसे वे अपने नेताओं को अपनी आवाज बनाकर संसद भेज सकें, जिससे आगे उनका ही फायदा हुआ लेकिन पेरियार ने संविधान जलाकर अंबेडकर जी का भी अपमान किया और देश विरोधी काम भी किया था।

1924 में पेरियार ने कहा था कि रामायण और भागवत गीता दोनों जातिवाद को बढ़ावा देती हैं, जबकि यह सच नहीं है क्योंकि, रामायण में राम एक शूद्र औरत सबरी के साथ बैठकर बेर खाकर उसे सम्मान देते हैं और गीता में वर्णव्यस्था की सही सोच दर्शाई गयी है, जिसमें साफ लिखा है कि इंसान का वर्ण उसकी काबिलियत से तय होगा। इसी से इनकी सोच समझी जा सकती है कि वैदिक धर्म और संस्कृति की समझ इन लोगों की न्यून थी। इसी कारण इन लोगों ने अपने जैसे लोग पकड़े और विरोध को अपनी आजीविका बना डाला। कुरीतियों का विरोध करो धर्म का विरोध गलत है और देश में फैली हुई बुराई का विरोध करो देश का विरोध गलत है। हो सकता है पेरियार ने एक आध कोई अच्छा कार्य किया हो लेकिन उनकी लिखी किताब सच्ची रामायण और उनके आन्दोलन से लगता है कि एक सत्ता का लालची सनकी ही ऐसा लिख सकता है।

प्रेरक प्रसंग

आज भोजन करना व्यर्थ रहा

फरवरी 1972 ई. में जब स्वामी श्री सत्यप्रकाशजी सरस्वती अबोहर पधारे तो कई आर्ययुवकों ने उनसे प्रार्थना की कि वे पण्डित गंगाप्रसादजी उपाध्याय के सम्बन्ध में कोई संस्मरण सुनाएँ। श्रद्धेय स्वामीजी ने कहा, ''किसी और के बारे में तो सुना सकता हूँ परन्तु उपाध्यायजी के बारे में किसी और से पूछें।''

एक दिन सायंकाल स्वामीजी महाराज के साथ हम भ्रमण को निकले तब वैदिक साहित्य की चर्चा चल पड़ी। मैंने पूछा, 'उपाध्यायजी का शरीर जर्जर हो चुका था, फिर भी वृद्ध अवस्था में उन्होंने इतना अधिक साहित्य कैसे तैयार कर दिया? अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उन्होंने कितने अनुपम व महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सृजन कर दिया।''

तब उत्तर में स्वामीजी ने कहा, ''उपाध्याय जी कहा करते थे, जिस दिन मैंने कुछ न लिखा उस दिल मैं समझूँगा कि आज मेरा भोजन व्यर्थ गया। भोजन करना तभी सार्थक है यदि कुछ साहित्य सेवा करूँ।''

आपने बताया कि वे (उपाध्यायजी) एक साथ कई-कई साहित्यिक (योजनाएँ) लेकर कार्य करते थे। एक से मन ऊबा तो दूसरे कार्य में जुट जाते थे, परन्तु लगे रहते थे। इससे उनका मन भी लगा रहता था, उनकों यह भी सन्तोष होता था कि किसी उपयोगी धर्म-कार्य में लगा हुआ हूँ। बस, यही रहस्य था उनकी महान् साधना का।

इस पर टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता के लिए यह घटना बड़ी प्रेरणाप्रद है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाजों में पुरोहित व्यवस्था *- राजीव चौधरी*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना है कि दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में पुरोहितों की अनिर्वाय नियुक्ति हो। अत: जो महानुभाव दिल्ली में पुरोहित हेतु अपनी सेवाएं देना चाहते हों, वे कृपया अपनी योग्यता एवं अनुभव के प्रमाण पत्रों सहित यथाशीघ्र आवेदन करें। इच्छुक महानुभाव अपने आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजें -

संयोजक, प्रचार विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1100011

नागरिकता संशोधन विधेयक (CAA) के विरोध में देशद्रोह की झलक

....चार दिन पहले भी पाकिस्तान में सिर्फ 14 साल की एक किशोरी को अपहरण करके जबरदस्ती उस अधेड; व्यक्ति ने उसके साथ निकाह किया, जिसकी पहले से ही तीन बीवियां मौजूद हैं। इस तरह की घटनाओं से भी कांग्रेस और विरोधी दलों की आंख नहीं खुल रहीं। इस तरह के मामलों में पीड़ित परिवारों को अगर भारत भी नागरिकता नहीं देगा तो आखिर वो दुनिया में कौन से देश में जाएंगे?..

सीएए (नागरिकता संशोधन कानून) का विरोध अब असली रूप में प्रकट होता दिख रहा है। कोई इस कानून को लेकर विरोध में है तो कोई समर्थन में और चर्चा तो खैर पूरे देश में चल ही रही है। सरकार इस कानून को लेकर कदम पीछे हटाने को तैयार नहीं है, तो कई राज्यों की सरकारें, दर्जनों राजनीतिक-गैर राजनीतिक व संगठनों की आड में देश विरोधी आबादी का एक ठीक-ठाक हिस्सा इसे स्वीकार करने के मूड में नहीं है। जो लोग सीएए का मुखर विरोध कर रहे हैं अब उनकी देशद्रोही सोच भी सामने आ रही है। शरजील इमाम और जे.एन.यू की छात्रा आफरीन फातमा जैसे जहरीली जुबान वाले राष्ट्रद्रोही सामने आ रहे हैं, भारत से असम को काटने की बात कहने वाले शरजील इमाम को पुलिस ने बिहार से अरेस्ट भी कर लिया है। नागरिक संशोधन कानून पर 22 जनवरी 2020 को सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल रोक लगाने से इंकार कर दिया है। कांग्रेसी नेता कपिल सिब्बल ने याचिका में कहा था कि कम से कम तीन महीने के लिए इसे रोक दिया जाए लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया कि वह केंद्र सरकार का पक्ष जाने बिना रोक नहीं लगा सकती। कपिल सिब्बल विवादास्पद मामलों में वकील बनने को लेकर काफी मशहूर हैं। हालांकि पिछले दिनों उनका एक बयान काफी सराहा गया था जिसमें उन्होंने कहा था कि कोई भी राज्य नागरिक संशोधन बिल को लागू करने से रोक नहीं सकता। संसद में जो बिल पास हुआ है उसको राज्य को लागू करना ही पड़ेगा। इसके बावजूद जाने क्या कारण रहे कि वह सुप्रीम कोर्ट में चले गए और इस काननू को रोकने की मांग की। सुप्रीम कोर्ट का आज का रुख देखते हुए कहा जा सकता है इस कानून को बदलने में फिलहाल कोई रुचि लेता दिखाई नहीं दे रहा। अब कांग्रेस के लिए सोचने का समय है कि वह नागरिकता कानून का विरोध इसी तरह जारी रखे या अपना स्टैंड बदले। शाहीन बाग में सड़क पर चल रहे धरने को लेकर भी कांग्रेस पर उंगलियां उठ रही है। कांग्रेस के कई बड़े नेता वहां पर आग लगाऊ भाषण देकर आए हैं। मणिशंकर अय्यर ने तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कातिल तक कहा है। इन सब घटनाक्रमों को देखकर लगता है कि सीएए का विरोध केवल सीएए का विरोध मात्र नहीं है, बल्कि इसमें अब देशद्रोह की झलक दिखने लगी है,

शाहीनबाग धरने के माध्यम से कांग्रेस दिल्ली विधानसभा चुनाव में अच्छे परिणाम निकलने की उम्मीद कर रही है। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर रोक लगाने से इनकार

- शेष पृष्ठ 6 पर

कश्मीरी पण्डितों का दर्द किसी को महसूस क्यों नहीं होता ?

....कश्मीरी पंडितों को 1990 के दशक में हत्या, बलात्कार, लूटपाट, आगजनी के बाद वहां से पलायन करना पड़ा था तो इस दौर के बाद आज तक नेहरु गांधी खानदान का कोई सदस्य इन कश्मीरी पंडितो का दु:ख दर्द जानने क्यों इनके पास नहीं गया? क्यों नहीं कांग्रेस ने इन लाखों कश्मीरी पंडितों को अपनी लम्बी सत्ता के दौरान इन्साफ दिया? क्यों आज भी नेहरु गांधी खानदान इन कश्मीरी पंडितो के खिलाफ है?.....

19 जनवरी 1990 को कश्मीर में कश्मीरी पंडितों का कत्लेआम व्यापक पैमाने पर हुआ था और जो लंबे समय तक चला था। 'हमें कश्मीर चाहिए मगर कश्मीरी पंडितों के बिना और उनकी पंडिताइनों के साथ' ये नारे 19 जनवरी 1990 को ही लगने शुरू हो गए थे। घरों के बाहर ये लिख-लिखकर पोस्टर चिपका दिए गए थे। आज देश में शहीन बाग समेत कई स्थानों पर सीएए के खिलाफ धरना प्रदर्शन चल रहा है, जो टीवी चैनलों की सुर्खियां बना हुआ है। जैसा कि इन प्रदर्शनकारियों का उद्देश्य है, इंटरनेशनल मीडिया भी इसे खूब दिखा रहा है लेकिन 19 जनवरी 1990 को लेकर 19 जनवरी 2020 को जम्मू-कश्मीर में कई स्थानों पर कश्मीरी पंडितों ने प्रदर्शन किए। इन खबरों को उस प्रमुखता से नहीं दिखाया गया जिसकी ये हकदार थीं। कुछ चैनलों ने जरूर इस पर काम किया लेकिन अधिकांश चैनलों ने 30 साल बाद भी इस जमात के साथ बेवफाई ही की है। **किसी ने क्या खूब कहा है-जिसके लागे वो ही जाने, कौन जारे पीर पराई।**

शाहीन बाग में बैठे प्रदर्शनकारी जिनमें से लगभग 80 प्रतिशत लोगों को सीएए का पता भी नहीं है, वे बेवजह ही दर्द से कराह रहे हैं और उनके दर्द को सारा मीडिया लगातार ताकत लगा कर दिखा भी रहा है। आज से करीब 25 साल पहले भी कश्मीरियों का कहना ये था हमारी सिर्फ यही गलती थी कि हमने धर्म परिवर्तन नहीं किया और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा हाथ में थाम के वंदे मातरम, भारत माता की जय के नारे लगाए। 19 जनवरी 2020 को भी दिल्ली और जम्मू में हुए प्रदर्शन के दौरान कश्मीरी पंडितों की तरफ से यही कहा जा रहा था हमारा गुनाह सिर्फ इतना ही था कि हमने भारत माता की जय बोली। कुछ कश्मीरी पंडित अपनी दर्दनाक विदाई की वर्षगांठ पर बहुत ही मार्मिक बात कहते दिखाई दिए। कह रहे थे कि कुछ महीने से कश्मीर में नेट बंद है तो आवाज उठाई जा रही हैं, हमने वीडियो नहीं देखी। लेकिन हमने 30 साल से अपने घर नहीं देखे, उस पर कोई आवाज नहीं उठा रहा। कुछ महीने नेट बंद होने को मानवाधिकार का हनन माना जा रहा है लेकिन जिन लोगों को मारपीट कर घर से निकाल दिया गया, उनके लिए कोई मानवाधिकार हनन की आवाज कोई नहीं उठा रहा।

जो राजनेता हर तरह की बातों पर टिप्पणी करते हैं लेकिन कश्मीरी पंडितों के कत्लेआम, आगजनी, हिंसा और पलायन पर आज तक उन्होंने कुछ नहीं कहा। 19 जनवरी का दिन 30 साल बाद एक बार फिर से यूं ही निकल गया जिस पर किसी नेता या विपक्षी नेता ने दुख तक जाहिर नहीं किया। अफसोस की बात है कि बात-बात पर अवॉर्ड वापस करने वाला अवॉर्ड वापसी गैंग भी 30 साल से लाखों कश्मीरी पंडितों के दुख दर्द पर खामोश है। सलमान खुर्शीद का बयान चैनलों पर चल रहा था कि हम सरकार को सबक सिखाएंगे। काश उनकी तरफ से इन लाखों विस्थापित कश्मीरी पंडितों के लिए भी कह दिया गया होता जो अपने ही देश में शरणार्थी बने हुए हैं। सोशल मीडिया पर पवन अवस्थी की एक पोस्ट खूब वायरल हो रही है। उसे ज्यों का त्यों आपके सामने रख रहा हूं- 'कांग्रेसी कहते हैं कि जवाहर लाल नेहरु कश्मीरी पंडित थे। अब मेरे मन में एक सवाल आता है कि अगर नेहरु खानदान सच में कश्मीरी पंडित है तो फिर इस खानदान ने अपनी लम्बी सत्ता के दौरान जम्मू-कश्मीर में अपने ही पंडित समाज को बर्बादी की तरफ कैसे धकेल दिया था? कैसे जम्मू-कश्मीर का आधा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया था? कश्मीरी पंडितों को 1990 के दशक में हत्या, बलात्कार, लूटपाट, आगजनी के बाद वहां से पलायन करना पड़ा था तो इस दौर के बाद आज तक नेहरु गांधी खानदान का कोई सदस्य इन कश्मीरी पंडितो का दु:ख दर्द जानने क्यों इनके पास नहीं गया? क्यों नहीं कांग्रेस ने इन लाखों कश्मीरी पंडितों को अपनी लम्बी सत्ता के दौरान इन्साफ दिया? क्यों आज भी नेहरु गांधी खानदान इन कश्मीरी पंडितो के खिलाफ है? अगर सच में नेहरु खांदान कश्मीरी पंडित समाज से है तो अपने ही समाज के प्रति इस खानदान के मन में इतनी नफरत क्यों है?आज देश में जो सीएए को लेकर उबाल है वह केवल वोटों की राजनीति का है, किसी को किसी के दर्द से क्या मतलब? लेकिन फिर भी कुछ लोग सीएए का विरोध कर रहे लोगों के दर्द से पीडित हैं, उन्हें कशमीरी पंडितों का दर्द भी महसूस करना चाहिए, दर्द तो दर्द होता है, इसमें अंतर कैसा?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित संस्था

सहयोग के मानव सेवा के क्षेत्र में बढ़ते कदम : गरीबों को बांटें सर्दियों के वस्त्र

बरेली (उत्तर प्रदेश) : आर्य समाज द्वारा सेवा, सहायता के लिए विख्यात सहयोग दिल्ली की निर्धन बस्तियों एवं आदिवासी क्षेत्रों में वस्त्र वितरण करते हुए देश के विभिन्न शहरों में भी अपनी चिर-परिचित शैली में सेवा का विस्तार कर रहा है। 14 जनवरी 2020 को राय बरेली, उत्तर प्रदेश के गांव में जा-जाकर निर्धन, गरीब लोगों को गर्म वस्त्र एवं कंबल वितरण किए। सहयोग के इस प्रयास से गरीब मजदूर स्त्री, पुरुषों और बच्चों के जीवन में खुशी की लहर दौड़ गई। गर्म कंबल पाकर लोग बेहद ही खुश नजर आए और बच्चों को भी सर्दी से बचने का साधन प्राप्त हुआ।

मायापुरी - हरकेश नगर (दिल्ली) : सभी योनियों में श्रेष्ठ मनुष्य चाहे कितना भी खुद्दार क्यों न हो लेकिन जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं तो सबकी समान होती हैं। सर्दी का मौसम, ऊपर से बरसात की आफत और शरीर को कंप-कंपा देने वाली सर्द हवाओं के बीच दिल्ली की निर्धन बस्तियों में रहने वाले बच्चे, युवा और वृद्धजनों का जीना मुहाल हो गया है। गरीबों की इस पीड़ा को अपनी निजी समस्या मानने वाली आर्य समाज की संस्था सहयोग जगह-जगह निर्धन बस्तियों में जाकर लगातार गर्म वस्त्रों का वितरण कर रही है। 18 जनवरी 2020 को सहयोग द्वारा मायापुरी और हरकेश नगर दिल्ली की निर्धन बस्तियों में जाकर वस्त्र वितरण का सेवा कार्य किया गया। मायापुरी में वस्त्र वितरण से पहले यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लेकर आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर भारी संख्या में बच्चे, बुर्जुग और युवा सभी उपस्थित थे। गर्म वस्त्रों के वितरण के समय दोनों स्थानों पर बच्चे इतने खुश हुए कि जैसे उन्हें मन मांगी मुराद मिल गई हो। गर्म वस्त्रों को पाकर बच्चे खुशी से झूमने लगे। बच्चों के चेहरे खिल उठे और उनके मजबूर माता-पिताओं को भी शांति और सुकून का अहसास हुआ। इस कार्यक्रम में कॉलेज में पढ़ रही लड़कियों ने भी सहयोग किया और सहयोग की टीम के साथ मिलकर वस्त्र वितरण किया।

सागरपुर (दिल्ली) : 71वें गणतंत्र दिवस से 2 दिन पूर्व 24 जनवरी 2020 को आर्य समाज मंदिर सागरपुर में निध ान बच्चों व उनके माता-पिताओं को गर्म वस्त्र भेंट किए गए। यह सभी बच्चे आर्य समाज मंदिर में प्रतिदिन योगाभ्यास एवं अध्ययन के लिए आते हैं। इन सभी बच्चों को वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा भी दी जाती है। सभी बच्चे उपहार स्वरूप सहयोग की भेंट प्राप्त कर अत्यंत खुश हुए।

(ऊपर) बरेली में नेत्रहीनों को कम्लब वितरण। सागरपुर में बच्चों को वस्त्रों का वितरण एवं नीचे हरकेश नगर - मायापुरी में यज्ञ के उपरान्त गर्म कपड़ों का वितरण।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मों का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मोबाइल नं. 9540050322 पर सम्पर्क करें।

- व्यवस्थापक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों में

नैतिक शिक्षा परीक्षा-2020 सम्पन्न : लगभग 15 हजार से अधिक छात्रों ने दी परीक्षा

वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कार मनुष्य को जीवन जीने की श्रेष्ठ कला सिखाते हैं, मानवीय नैतिक मूल्यों से अवगत कराते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं, आर्य समाज के सिद्धांत और मान्यताओं से देश की युवा पीढ़ी को परिचित कराने हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि ा सभा द्वारा आर्य विद्या परिषद के माध्यम से दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों में 23 जनवरी 2020 को नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 40 आर्य विद्यालयों के 15 हजार से अधिक बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। यह परीक्षा सभी विद्यालयों में पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई, जोकि सभी विद्यालयों में एक ही समय पर प्रारम्भ हुई थी। इस अवसर पर दिल्ली में संचालित समस्त आर्य विद्यालयों के बच्चों ने विधिवत् परीक्षा में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री सुरेंद्र रैली जी के नेतृत्व में समस्त अधिकारियों ने बड़ी तत्परता से सारा कार्यक्रम सुनिश्चित कर सफलता पूर्वक संपन्न कराया। सभी स्कूलों प्राचार्य एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं और अन्य स्टाफ का परिश्रम प्रशंसनीय है, स्कूलों में परीक्षा दे रहे छात्रों का उत्साह देखने लायक था, सभी स्कूलों के छात्रों की संपन्न हुई। दिल्ली के बाहर के विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम लागु है वहां भी परीक्षा आयोजित करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी आर्य विद्यालयों से निवेदन है कि अपने यहां परीक्षा आयोजित करने के लिए नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम लागू करें। *- वीना आर्या*

Continue from last issue

Good Conduct And Eatables

'Good conduct' might be defined as engaging in righteous acts, good behaviour, good company and inclination towards right type of knowledge; while the reverse is treated as 'bad conduct'. The main duty and conduct for the man is to restrain all his senses like a good driver, from wandering into wrong paths. He cannot succeed in the knowledge of Dharma, and Vedas. as also is the act of sacrifices, Yajnas, and relating to life, etc. Therefore it is essential for a man that he should try to accomplish all his desires, by restraining all his five senses, five organs and Mind, as also preserving it in a regulated life, as regards the meals, walkings, and Yogic exercises, etc. One must give successive preference to the riches, relation, age, action_and pious knowledge, in that order. A man without any knowledge should be treated as a child, even though he might have attained the age of hundred years; while even a child should be treated as an elder if only he possesses knowledge and gives it to others.

One must have clean and pure habits as regards bathing clothing, eating, drinking, etc., because only in this way one can attain the purity of mind and health of the body. This also encourages his strength. But this purification must be aimed only at removing the impurities, and should become the aim in itself. It is therefore that 'Good conduct' and 'Character' has been declared, in Vedas and other- scriptures, as the most sacred 'duty' of the humanbeings, This has been explained in the Vedas and Manusmriti as. Serving the parents, teachers and Guests, accordingly; performing the benevolent for all ; having comyany of the righteous, truthful and benevolent people, that instead. of the non-believers and bad people; etc.

Sometimes even crossing the seas and foreign trips are- declared as Adharma acts. All this is wrong, because the· kings of this very Aryavarta, the country of ours, were crossing all the seas and continents for purposes of conquest, marriage, and travel etc., even before and until Mahabharata. For example, Shukra and Arjuna went to. Patala, i. e. America of the time of today, which the histo- rians deny because of their ignorance or due to some other ulterior motives. Therefore we must go to foreign coun- tries. so as to benefit from their progress in the fields of knowledge, and other scientific advancement, etc. The same ill true about the purity of eating and dinking etc .. The Shudras should not be debarred from preparing food etc. Rather they should be engaged in such acts, so as the, educated people are released for other important duties. But the former must take care of cleaniness and purity in all such matters.

Dietetics is of two types: One prescribed in Scriptures, and the other prescribed in Medical Works. According to the former butchery, meat-eating, drinking of purifies or smelling things, etc. is prescribed; while medically each thing has to be described according to its scientific values. Therefore, one must not kill animals, more particularly the milch and beneflcient animals, like cow, goat, etc. A cow, with its progenies, satisfies millions of people, if counted properly. The same is true in case af goat, etc. Violent and killer animals might be allowed to be killed according to the law of the land, only to save others from their vagaries, but not for eating their meat, as that will make its eaters violent and aggressive in nature.

No undue consideration should be given to the place, method and various other aspects of cooking. It may be cooked anywhere, if only the place is good and attractive. We must not encourage the differences based on such small considerations. Instead we should try to reduce them, so that all may adopt the same righteous path, as prescribed in the Vedas: and make the human race more joyous: and this earth a better living place.

To be continued.....

With thanks By:
"Flash of Truth"

प्रथम पृष्ठ का शेष

71वें गणतंत्र दिवस पर सामूहिक .....

अंताक्षरी, वेदमंत्रों व देशभक्ति के गीतों की प्रस्तुति से सारा वातावरण प्रसन्नता से परिपूर्ण हो गया। इसके साथ-साथ देशभक्ति के गीतों का गायन किया गया।

दिल्ली सभा द्वारा आयोजित आर्यो का यह भ्रमण कार्यक्रम अपने आपमें अत्यंत प्रेरणादायी सिद्ध होता है।क्योंकि इस अवसर पर बच्चों, महिलाओं और पुरुषों द्वारा खेल प्रतियोगिताओं में सहर्ष हिस्सा लिया जाता है। इस बार भी सभी ने खुशी -खुशी खूब खेल खेले और हंसने-हंसाने का आनंद लिया। जिससे यह यादगार पल पूरे वर्ष आर्यजनों का उत्साह बढ़ाने वाले सिद्ध होते रहेंगे। इन खेल प्रतियोगिताओं के साथ-साथ सभी आर्य प्रेमियों का नाश्ता भी 12:30 बजे तक लगातार चलता रहा। उसके बाद में सभी ने गोलगप्पों का आनंद लिया। लगभग 3:15 बजे सभी आर्यजनों ने भोजन ग्रहण किया लेकिन सबसे बड़ी बात आज पूरी तरह से मौसम साफ था और धूप खिली हुई थी। थोड़ी-थोड़ी हवाओं के साथ सर्दी का अहसास तो था लेकिन सारा वातावरण अनुकूलता प्रदान करता रहा। इस पूरे कार्यक्रम के आयोजन में आर्य समाज कीर्तिनगर के प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी, उपप्रधान श्री राजेंद्रपाल आर्य जी, श्री सुरेश तेजी जी, यमुना विहार से श्री विश्वास वर्मा जी, विकासपुरी आउटर रिंग रोड़ से प्रधान श्री वेदप्रकाश जी, माडल बस्ती के मंत्री श्री आदर्श कुमार जी, विकासपुरी डी-ब्लॉक से मन्त्री श्री ज्योति ओबराय जी का विशेष योगदान रहा। कीर्तिनगर आर्य समाज द्वारा भोजन के लिए हलवाई और कुर्सी मेज आदि की पूर्ण व्यवस्था की गई थी। पूरे प्रेम और सौहार्द के वातावरण में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ और सभी आर्यजनों ने एक दूसरे को गणतंत्र दिवस की बधाई दी।

- सतीश चड्डा, संयोजक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 4 का शेष

नागरिकता संशोधन विधेयक (CAA) ....

किया है। सभी जानते हैं कि दिल्ली रामलीला मैदान में नागरिकता कानून के खिलाफ सोनिया गांधी के भड़काऊ भाषण के अगले दिन ही जामिया मिलिया व अनेक स्थानों पर आगजनी की घटनाएं हुई थीं।

कांग्रेस ने यह अफवाह फैलाने की शुरुआत की कि यह कानून देश के मुसलमानों की नागरिकता खत्म करने के लिए है, जबकि सच यह है कि यह बाहर के नागरिकों को देश में नागरिकता देने का कानून है। कांग्रेस लगातार भ्रम फैला रही है और अफवाहों के बलबूते पर राजनीति कर रही है। दुर्भाग्य से एक जमात के बहुत से लोग कांग्रेस के बहकावे में आ रहे हैं। इनमें से कुछ लोग वह हैं जो दूसरी बातों पर नरेंद्र मोदी और अमित शाह से नाराज हैं लेकिन उस समय किन्हीं कारणों से अपनी नाराजगी नहीं निकाल पाए। उन्होंने नागरिक संशोधन कानून और नागरिक रजिस्टर जैसे विषयों को मुद्दा बना लिया है। अफसोस की बात तो यह है कि कई कांग्रेसी राज्य विधानसभा में प्रस्ताव पास कर रहे हैं कि वो इस कानून को अपने प्रदेश में लागू नहीं करेंगे और इसी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, पूर्व कानून मंत्री और सुप्रीम कोर्ट के धुरंधर वकील कपिल सिब्बल कह रहे हैं कि राज्य कानून को लागू करने से नहीं रोक सकते।

खास बात यह है कि कांग्रेस आज जिस कानून का विरोध कर रही है, उसका प्रस्ताव वही अपनी सरकार के दौरान लेकर आई थी और मोदी सरकार के पिछले कार्यकाल में इस कानून के लागू न किए जाने को लेकर कांग्रेस के नेताओं ने बराबर नाराजगी भी दिखाई थी। एक तरफ कांग्रेस पाकिस्तान, बांग्लादेश व अफगानिस्तान के अल्प संख्यकों को भारत में नागरिकता दिए जाने का विरोध कर रही है, दूसरी पाकिस्तान में लगातार इस तरह की घटनाएं हो रही हैं जहां अल्पसंख्यकों को खासतौर पर हिंदुओं और सिखों को निशाना बनाया जा रहा है। चार दिन पहले भी सिर्फ 14 साल की एक किशोरी को अपहरण करके जबरदस्त उस अधेड; व्यक्ति ने उसके साथ निकाह किया जिसकी पहले से ही तीन बीवियां मौजूद हैं। इस तरह की घटनाओं से भी कांग्रेस और विरोधी दलों की आंख नहीं खुल रहीं। इस तरह के मामलों में पीड़ित परिवारों को अगर भारत भी नागरिकता नहीं देगा तो आखिर वो दुनिया में कौन से देश में जाएंगे?

प्रथम पृष्ठ का शेष

196वां महर्षि दयानन्द सरस्वती....

सबको पूरी शक्ति के साथ महर्षि दयानंद जी के जन्मदिन को मानव सेवा एवं वैदिक धर्म प्रचार दिवस, सप्ताह अथवा पक्ष के रूप में मनाएं महर्षि दयानंद सरस्वती का 196वां जन्म दिवस। इस अवसर पर विशेष रूप से सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भंडारा/ऋषि लंगर, विशाल शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या इत्यादि कार्यक्रम आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमंत्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्य समाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमंत्रण, महर्षि दयानंद जीवनी आदि साहित्य सभा कार्यालय में उपलब्ध है। इसकी प्राप्ति के लिए मोबाइल नं· 9540040339 पर संपर्क करें। *- महामंत्री*

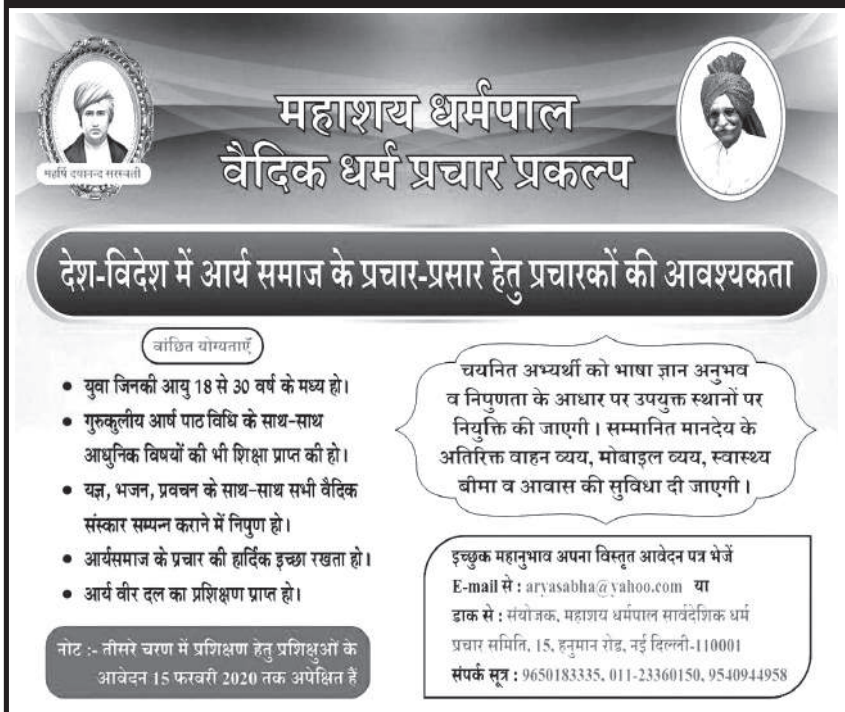

स्वामी श्रद्धानंद जी के जन्मोत्सव का आयोजन

आर्य समाज कनखल व आर्य वीर दल उत्तराखण्ड द्वारा राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के प्रेरणा स्तंभ, महर्षि दयानंद सरस्वती के महान भक्त स्वामी श्रद्धानंद जी के जन्मोत्सव का आयोजन 2 फरवरी 2020 को किया जाएगा। इस अवसर पर दयानंद स्टेडियम गुरुकुल कागंड़ी विश्व विद्यालय से भव्य शोभायात्रा रोड धर्मशाला तक निकाली जाएगी। यज्ञ, प्रवचन एवं भजनों के विशेष आयोजन होंगे। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित है। - ***संयोजक***

5 वां वार्षिक उत्सव

ब्रह्मवर्चस्व गुरुकुलम् बीरपाड़ा, बाड़ाहौदा ग्राम, जिला अलीपुरद्वार में 1 से 2 फरवरी 2020 को ब्रह्मवर्चस्व गुरुकुल का 5 वां वार्षिक उत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य योगेश शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, श्री जोन बारला सांसद, श्री मनोज तिग्गा विधायक, श्री शारोन तामंग बी.डी.ओ, श्री दौरजे शेरपा, वनपाल दलगांव रेंज, श्री रोहित विश्वकर्मा आदि उपस्थित होंगे। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।

- ***आचार्या श्रीमती सरस्वती शास्त्री***

76वां वार्षिक उत्सव संपन्न

आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई द्वारा 23 जनवरी से 26 जनवरी 2020 तक 76वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। ऋग्वेद प्रयाण यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. रूपकिशोर शास्त्री जी ने सभी यजमानों को वेदमंत्रों का सरल संदेश दिया। प्रतिदिन श्री प्रभाकर शर्मा, श्री योगेश आर्य जी के भजन उपदेश हुए। विशेष सारगर्भित प्रवचन डॉ. रूपकिशोर जी ने दिए। महिला सम्मेलन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। इस अवसर पर विशेष पुरस्कार समारोह में श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, को श्रीमेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार, डॉ. रूपकिशोर शास्त्री जी, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी को वेद-वेदांग पुरस्कार, डॉ. पुनीत आर्य जी को वेदोपदेशक पुरस्कार, आचार्य शिव कुमार शास्त्री जी को पंडित युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार, ब्रह्मचारी दिनेश जी को श्रीमती कृष्णा गांधी आर्य युवक पुरस्कार, श्रीमती कमला नरेंद्र भूषण जी को श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार, स्वामी यज्ञमुनि सरस्वती जी को स्वर्गीय नारायण दास हसानंदानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार, आचार्य कर्मवीर जी को श्री हरभगवान गांधी मेधावी पुरस्कार, श्री आकाश आर्य जी को श्रीमती शिवराजवती आर्या मेधावी छात्र पुरस्कार, श्री दिनेश सिंह जी इत्यादि महानुभावों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ। - ***रमेश आर्य, का. महामंत्री***

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर प्रकाशित किया जाएगा। - **सम्पादक**

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी.डी/पैन ड्राइव के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें। - ***महामन्त्री***

ज्ञान गंगा संस्कार यज्ञ संपन्न

26 जनवरी 2020 को प्रात: 8 बजे से आर्य समाज मंदिर करोल बाग के प्रांगण में 10 से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया और उन्हें वैदिक ज्ञान और संस्कारों का सरल ज्ञान प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कमांडर रि. श्री वीरेंद्र जेतली जी,मोटिवेशनल वक्ता एवं सदस्य बोर्ड ऑफ गर्वनर्स आई.आई.टी. भुवनेश्वर में बच्चों को सकारात्मक शक्ति का संदेश देते हुए संस्कारों का जीवन में कितना महत्त्व है, यह बड़े सरल भाव से समझाया। इस रचनात्मक कार्यक्रम का लक्ष्य बाल संस्कार केंद्र और आर्य समाज करोल बाग ने संयुक्त रूप से आयोजन किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा/ आर्यसमाज दिल्ली से सम्बन्धित नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

आर्ष पद्धति के माध्यम से अध्ययनरत गुरुकुलीय छात्र/छात्राओं से छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

गुरुकुलों, पाठशालाओं, आश्रमों में आर्ष पाठ विधि से विद्या अध्ययन करने वाले अथवा ऐसे छात्र-छात्रा जो आर्ष पाठ विधि से पढ़ चुके हैं तथा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों के साथ संस्कृत साहित्य का भी अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन कर रहे हैं अथवा ऐसे विद्यानुरागी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं अथवा जिनके माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं, को आर्यसमाज की ओर से छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपरोक्त के अन्तर्गत आने वाले छात्र-छात्राएं अपना नाम, पिता/माता/ संरक्षक का नाम, पता, विद्यालय/संस्थान का नाम लिखते हुए आवेदन करें। आवेदन पत्र पर विद्यार्थी के प्रधानाचार्य/आचार्य के हस्ताक्षर सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य हों।

इच्छुक विद्यार्थी/संस्थान अपने आवेदन पत्र 'महामन्त्री' के नाम निम्न पते पर प्रेषित करें-

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

- ***महामन्त्री***

आवश्यक सूचना शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण पुस्तक के संदर्भ में निवेदन

समस्त आर्यसमाजों के मान्य अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं और आर्यजनों से निवेदन है कि पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद जी द्वारा लिखित पुस्तक शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण की प्रति अगर किसी महानुभाव के पास हो, तो कृपया उसकी फोटो प्रति अथवा मूल प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भिजवाने की कृपा करें। यह पुस्तक कहीं मिल नहीं रही है और सभा इसका पुन: पकाशन कराना चाहती है। पुस्तक की प्रति भिजवाने के लिए यदि कोई शुल्क देय हो तो कृपया सूचित करें, सभा की ओर से भुगतान कर दिया जाएगा। कृपया पुस्तक/ प्रति **'महामन्त्री'** के नाम निम्न पते पर भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आर्यजगत के आजीवन ब्रह्मचारीगण अपना विवरण भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज के उत्थान और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित उन सभी आजीवन ब्रह्मचारियों, जो आजीवन अविवाहित रहकर महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। सभा ऐसे सभी ब्रह्मचारियों के कल्याणार्थ विशेष योजना तैयार करना चाहती है। अत: आजीवन ब्रह्मचर्यव्रती युवक-युवतियां अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - ***महामन्त्री***

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - ***महामन्त्री***

समाचार संशोधन : खेद है कि आर्यसन्देश के गत अंक 20 से 26 जनवरी, 2020 में पृष्ठ 8 पर प्रकाशित निर्वाचन सूचना में निर्वाचन तिथि 27 दिसम्बर, 2019 प्रकाशन हो गया है। कृपया इसे सुधारकर 29 दिसम्बर, 2019 पढ़ा जाए। सम्पादक मंडल इस भूल हेतु खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 जनवरी, 2020 से रविवार 2 फरवरी, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30-31 जनवरी, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 जनवरी, 2020

प्रतिष्ठा में,

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य शिक्षण संस्थानों ने मनाया राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस

दिल्ली की लगभग सभी आर्य समाजों और समस्त शिक्षण संस्थाओं में हमेशा राष्ट्रीय पर्वों को हर्षोल्लास से मनाया जाता रहा है। भारत के 71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर एस.एम.आर्य पब्लिक

स्कूल पंजाबी बाग, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादी खाम पुर, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल मॉडल बस्ती, आदि में विशेष समारोह का आयोजन किया गया। एस. एम. आर्य स्कूल में कार्यक्रम का शुभारंभ श्री धर्मपाल आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने करकमलों से द्वीप प्रज्वलित कर किया। श्री योगेश आर्य जी, श्री सत्यानंद आर्य जी, श्रीमती वीना आर्या जी एवं स्कूल की प्रिंसीपल और अधिकारीगणों सहित अनेक अन्य महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे। बड़ी शान से तिरंगा ध्वज लहराया गया। बच्चों में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। ढोल, नगाड़ों और संगीत की धुन पर बच्चों ने सर्वांग सुंदर व्यायाम प्रस्तुत किए। श्री धर्मपाल आर्य जी बच्चों को राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा देते हुए अपने संदेश में कहा कि राष्ट्र सबसे बड़ा होता है। राष्ट्र की तरक्की में सबकी तरक्की होती है। इस देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को आहूत करने वाले अमर शहीदों को हमें याद करना चाहिए और उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। देश की सरहद पर माइनस 30 टेम्परेचर में भी जो लोग हमारी सुरक्षा कर रहे हैं उनको भी हमें नमन करना चाहिए और धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि राष्ट्र भक्ति ही सबसे बड़ी भक्ति है।

भारत के 71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर महर्षि दयानंद आर्य पब्लिक स्कूल शादी खानपुर द्वारा विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर तिरंगा ध्वज लहराया गया। बच्चों ने विभिन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह